कुक्कुटों के परजीवी रोग

डा0 स्तुति वत्सया
डा0 राजीव रंजन कुमार

परजीवी विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
गो0 ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला–ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कुक्कुटों के परजीवी रोग

मुर्गी पालन आधुनिक समय में एक लाभप्रद व्यवसाय है। भारत की अर्थव्यवस्था में मुर्गी पालन व्यवसाय का विषेष योगदान है। मुर्गियों की उत्पादकता सर्वदा बनी रहे इसके लिए आवष्यक है कि वे रोगमुक्त रहें। परन्तु कुक्कुट पालकों को जानकारी के अभाव के कारण मुर्गी पालन के दौरान अनेकों प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं जिसके कारण किसानों को अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसका मुख्य कारण कुक्कुटों में विभिन्न प्रकार की जीवाणु एवं विषाणु जनित बीमारियों का होना है। इसके अलावा मुर्गियों में कुछ परजीवी रोग भी होते हैं जो उनके स्वास्थ्य का ह्रास करते हैं। जीवाणु एवं विषाणु जनित रोगों को टीकाकरण के द्वारा रोका जा सकता है लेकिन परजीवी रोगों की रोकथाम सिर्फ प्रबंधन एवं उपचार के द्वारा ही की जा सकती है। मुर्गियों के स्वास्थ्य को विभिन्न प्रकार के परजीवी रोग नुकसान पहुॅचाते हैं, जिससे सम्बन्धित जानकारी मुर्गीपालक को अवष्यक रखनी चाहिए।

मुर्गियों में बीमारी का तब पता चलता है जब उनमें कुछ विषेष प्रकार के लक्षण दिखाई देने लगते हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैंः–

रोगग्रस्त मुर्गियों के प्रमुख लक्षणः

- बीमार चूजे या मुर्गियॉ एक स्थान पर एकत्र होने लगते हैं तथा कुछ मुर्गियॉ ऑखें बन्द करके व सिर झुकाकर एक स्थान पर बैठ जाती हैं।
- बीमार मुर्गियॉ दाना व पानी कम खाती–पीती हैं या पानी पीना बिल्कुल बन्द कर देती हैं।
- बीमारी के दौरान मुर्गियों के पंख ढीले हो जाते हैं तथा अस्त–व्यस्त दिखाई देते हैं।
- मुर्गियों की ऑखों की चमक कम हो जाती है तथा उनकी आंखों का रंग बदल जाता है। उनमें पानी आने लगता है व कभी–कभी आंखें चिपक जाती हैं तथा कुछ बीमारियों में सूजन भी आ जाती है।
- मुर्गियों में सामान्यतः पेचिस की बीमारी भी हो जाती है तथा पेचिस के दौरान मल का रंग हरा, पीला, सफेद या लाल हो जाता है।
- मुर्गियॉ सांस लेते समय आवाज करती हैं तथा सांस लेने में कठिनाई महसूस करती हैं; और कभी–कभी चोंच खोलकर सांस लेती हैं।
- बीमारी के दौरान मुर्गियों की शारीरिक वृद्धि दर में गिरावट आती है तथा अण्डे की पैदावार कम हो जाती है। कभी–कभी बिन छिलके अथवा पतले छिलके का अण्डा देने लगती है।

मुर्गियों में मुख्यतः दो प्रकार के परजीवी रोग होते हैं:–

(1) अन्तः परजीवी रोग (2) बाह्य परजीवी रोग

(1) अन्तः परजीवी रोग

अन्तः परजीवी मुर्गियों के शरीर के आहार नली आदि में दिखाई देते हैं और मुर्गियों में विभिन्न प्रकार की बीमारियॉ पैदा करते हैं। इसमें गोलकृमि (राउन्ड वर्म) रोग, फीताकृमि (टेपवर्म) रोग, फ्लूक (पत्ता कृमि) रोग व काक्सीडियोसिस रोग आदि प्रधान बीमारियॉ हैं।

(क) गोलकृमि (राउन्ड वर्म):

1. एस्केरिओसिसः

यह रोग *एस्केरिडिया गेलाई* व *हेटेराकिस गेलीनेरम* से होता है। यह कृमि वेलन आकृति तथा किनारों पर नुकीले होते हैं जो आहार नली का एक प्रधान परजीवी है जोकि पॉच से बाहर सप्ताह उम्र की मुर्गियों में पाया जाता है। यह 5 से 8 सेमी. लम्बे तथा 1 से 2 मिमी. चौड़े होते हैं। तीन माह से अधिक उम्र की मुर्गियों में यह रोग कम मिलता है। व्यस्क मुर्गियॉ कम उम्र की मुर्गियों के लिए संक्रमण का स्रोत होती हैं। विटामिन–ए, बी, बी–12, खनिजों तथा प्रोटीन की कमी संक्रमण की प्रवृत्ति को बढ़ाती है। मुर्गियॉ दाने तथा पानी के साथ परजीवी के अण्डे खाकर संक्रमित होती हैं।

लक्षण: ये कृमि हर तरह के पक्षियों में पाये जाते हैं जैसे मुर्गी, टर्की, बटेर, बत्तख आदि। संक्रमित मुर्गियों में कमजोरी, रक्तहीनता, अतिसार आदि लक्षण दिखाई देते हैं। मुर्गियों का वजन घट जाता है तथा अण्डों की पैदावार कम हो जाती है। कभी–कभी कृमि की संख्या में तीव्र वृद्धि होने से आहार नली अवरूद्ध हो जाती हैं अथवा आहार नली फट भी सकती है, जिसके कारण मुर्गी की मृत्यु हो जाती है।

निदान: मुर्गियों को बीमारी की जॉच व उपचार के लिए पशु चिकित्सा अधिकारी की सहायता आवष्यक होती है। प्रभावित मुर्गियों के मल परीक्षण में कृमि के अण्डों को देखकर अथवा मृत मुर्गियों के शव परीक्षण से ऑत में व्यस्क परजीवी देखकर रोग का पता लागया जा सकता है।

उपचार: बारह हफ्ते के ऊपर उम्र वाली मुर्गियों को हर एक या दो महीनों के अन्तराल में पिपराजिन 200–300 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 शारीरिक वजन के अनुसार पानी में मिलाकर दें।

रोकथाम: मुर्गियों को साफ व शुद्ध पानी पिलाना चाहिए। मुर्गी फार्म के अन्दर जंगली पक्षी जैसे कौवा, चील, कबूतर आदि को नहीं घुसने देना चाहिए और न ही उन्हें घोंसला बनाने देना चाहिए। मुर्गियों का विछावन अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए।

2. गेपवर्म रोग (सिनगैमस):

यह रोग *सिनगैमस ट्रैकिया* नामक गोलकृमि के द्वारा होता है जो पक्षियों की श्वास नली में पाया जाता है। इस बिमारी के होने की सम्भावना टर्की में सबसे ज्यादा होती है तथा आजीवन बनी रहती है। किन्तु अन्य मुर्गियॉ भी रोग से प्रभावित होती हैं। कुक्कुटों में संक्रमण गोलकृमि के लार्वा से संक्रमित दाना अथवा पानी ग्रहण कर लेने से अथवा केंचुओं, घोंघो, मक्खी व गोबरैलों के खाने से हो जाता है, जिनमें इन गोलकृमियों के लार्वा (अण्डों को खाने से) विकसित हो जाते हैं। संक्रमण सामान्यतः वर्षा ऋतु में होता है।

लक्षण: फेफड़ों की सूजन की वजह से मुर्गियों को सांस लेने में कठिनाई होती है जिसके कारण ग्रसित पक्षी गर्दन विस्तृत करके चोंच खोलकर सांस लेते हैं। रक्तहीनता, कमजोरी, अकस्मात् मृत्यु आदि अन्य लक्षण हैं।

निदान: प्रभावित मुर्गियों के लक्षण मल परीक्षण व शव परीक्षण से बिमारी का पता लगाया जा सकता है।

उपचार: फेनबेन्डाजोल 15 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 मुर्गी का भार के दर से 2 दिन तक मुर्गियों को खिलाना चाहिए। इसके अलावा फेनविनडाजॉल, मीवेनडाजॉल आदि का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

रोकथाम: टर्की व अन्य मुर्गियों को अलग–अलग पालना चाहिए। वर्षा ऋतु में केंचुओं आदि को मुर्गी घर में घुसने से रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए।

(ख) फ्लूक (पत्ताकृमि) रोग:

फ्लूक चपटे, अखण्डित, पत्ते की आकृति वाले कृमि होते हैं, जिन्हें अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए कुक्कुटों के अलावा अन्य 1–2 मध्यवर्ती जीवों की आवष्यकता होती है। प्रथम मध्यवर्ती जीव घोंघे एवं द्वितीय मध्यवर्ती जीव ड्रैगन फ्लाई होते हैं।

प्रोसथोगोनिमस: यह परजीवी कुक्कुटों के अण्डाषय तथा बर्सा में पाया जाता है। यह मुर्गियों में पाया जाने वाला सबसे हानिकारक फ्लूक है। यह कृमि अण्डाषय की नली में शोध उत्पन्न करता है जिससे कि मुर्गियॉ दुर्बल कोष वाले अथवा बिना कोष के अण्डे दे देती हैं। इससे मुर्गीपालकों को नुकसान उठाना पड़ता है।

लक्षण: प्रभावित मुर्गियॉ पक्षीगृह में उदासीन बैठी रहती हैं। अण्डे टूटने से मुर्गियों के नीचे के पंख मलिन होकर चिपक जाते हैं। यदि ऑत की झिल्ली संक्रमित हो जाए तो उदर लटकने से मुर्गियॉ दोनों टांगे दूर करके चलती है, कलगी नीली हो जाती है, चूनेदार दस्त होता है तथा मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

निदान: असाधारण अण्डे देने वाली मुर्गियों की बीठ पशु चिकित्सक से जॉच करवानी चाहिए।

उपचार: मुर्गियों को 5–10 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 मुर्गी के शारीरिक भार की दर से प्राजीक्वान्टेल खिलानी चाहिए। मिवेन्डाजॉल का 10–15 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 मुर्गी के शारीरिक भार की दर से इस्तेमाल भी उपयोगी होता है।

रोकथाम: मुर्गियों को जलाषयों से दूर रखना चाहिए चूँकि इस फ्लेटवॉर्म को अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए घोंघो व ड्रैगनफ्लाई की आवष्यकता होती है।

(ग) फीता कृमि (टेप वर्म) रोगः

फीता कृमि चपटे तथा फीता या रिबन की आकृति के समान लम्बे होते हैं। उनका शरीर कुछ खण्ड के मिश्रण से बना होता है और वे देखने में सफेद रंग के होते हैं। सामने का भाग थोड़ा पतला होता है जिसमें सिर और गर्दन होती है। फीता कृमि बाहर घूमने वाली या घर के पिछवाड़े पालने वाली मुर्गियों में ज्यादा तौर से पाये जाते हैं। मुर्गियों में मुख्यतः डेवेनिया, रेलेटीना, कोटुगनिया, कोएनोटीनिया, हाईमेनोलेपिस आदि फीताकृमि पाए जाते हैं।

इन कृमियों को अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए मध्यवर्ती प्राणी जैसे– मक्खी, चींटियों, घोघें, स्लग, केंचुओं आदि की आवष्यकता होती हैं। यह प्राणी प्रभावित मुर्गियों के मल से फीताकृमि के अण्डे खाते हैं और उनके शरीर में इन अण्डों से फीता कृमि के लार्वा विकसित होते हैं। जब मुर्गियॉ इस मध्यवर्ती पर पोषक प्राणी जैसे मक्खी, केंचुओं, चिंटी आदि खाती हैं तब मुर्गियों के शरीर में फीता कृमि का लार्वा प्रवेष कर जाता है और व्यस्क फीताकृमि में विकसित हो जाता है।

लक्षण: फीता कृमि से प्रभावित मुर्गियों में कमजोरी, रक्तहीनता, वजन में कमी हो जाती है और अण्डों की पैदावार में कमी आदि लक्षण पाये जाते हैं। कुछ फीताकृमि ऑत में छोटी–छोटी गॉठें भी बना लेते हैं। डेवेनिया कृमि से ग्रस्त मुर्गियों में खूनी दस्त होने लगता है।

निदान: मल में फीता कृमि का खण्ड, अण्डे या शव परीक्षण के जरिये आहार नली में फीता कृमि को देख कर इस बीमारी का निदान किया जा सकता है।

उपचार: मुर्गियों को प्राजीक्वान्टेल (10 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 शारीरिक भार), निकलेसामाइड (20 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 शारीरिक भार की दर से 2–6 दिन तक अथवा 50–200 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 पानी में), ऑक्सफेनडाजॉल (10 मि0ग्रा0/कि0ग्रा0 शारीरिक भार) आदि दवाईयों का सेवन करवाया जा सकता है।

रोकथाम: मुर्गियों के आहार में प्राणी जनित खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल करना चाहिए। जैसे मछली का चूर्ण, खून व हड्डियॉ, मांस आदि का चूर्ण सही रूप में शुद्धिकरण किया हुआ होना चाहिये। मुर्गीफार्म में कीट पतंगों का नियंत्रण करना चाहिए।

(घ) कौक्सीडियोसिस रोग: यह रोग बिछावन पर पलने वाली कम उम्र की मुर्गियों में अधिक पाया जाता है। कौक्सीडियोसिस बीमारी आइमेरिया नामक परजीवी से होती है, जो मुर्गी की ऑत में पाया जाता है। मुर्गी में यह रोग छोटी ऑत (इन्टेस्टीनल), बड़ी ऑत (सीकल) या रेक्टल कौक्सीडियोसिस के रूप में पाया जाता है। जो क्रमषः आइमेरिया नेकाट्रिक्स, आइमेरिया टेनेला तथा आइमेरिया ब्रूनेटाई द्वारा होता है।

लक्षण: कौक्सीडियोसिस ज्यादा तौर पर 3 से 12 हफ्ते तक उम्र वाली मुर्गियों में पायी जाती है। यह रोग मुर्गियों में अति तीव्रता से होता है। प्रभावित मुर्गियॉ सिर नीचा करके कमरे से एक कोने में अलग और अन्य मुर्गियों से दूर खड़ी रहती है। बीमार मुर्गी सुस्त दिखाई देती है, उनके पंख ढीले हो जाते हैं तथा खूनी पेचिस हो जाती है। खूनी दस्त इस बीमारी का प्रमुख लक्षण है। कुछ घंटों के बाद बीमार मुर्गी की मृत्यु हो जाती है। फार्म में इस बीमारी के कारण मृत्यु दर में

लगातार वृद्धि होती है। इस बीमारी में मुर्गियों का वजन घट जाता है तथा इससे प्रभावित मुर्गियॉ दाना कम खाती है।

निदान: प्रभावित मुर्गियों के लक्षण, मल परीक्षण या शव परीक्षण से इस बीमारी का पता किया जा सकता है।

उपचार: प्रभावित मुर्गियों को डाक्टर की सलाह लेकर एम्प्रोलियम (0.125%) या सलफाक्वीनोक्सेलिन (0.5%) नामक दवाई दाना व पानी में मिलाकर देनी चाहिए।

रोकथाम: मुर्गियों का बिछावन सदैव सूखा रहना चाहिए, जब कभी उसमें नमीपन आ जाये तब पिसा हुआ चूना मिला देना चाहिये। रोजाना या एक दिन अन्तराल के बाद बिछावन को उलट–पलट कर कड़ी धूप में सूखाना चाहिए। मुर्गी फार्म में सही ढंग से हवा आर–पार होना चाहिए। मुर्गी के दाने में इस बीमारी की रोकने के लिए कौक्सीडियोस्टेट नामक दवाई मिलानी चाहिये। सही कौक्सीडियोस्टेट का इस्तेमाल डाक्टर की सलाह पर करना चाहिए। कम उम्र की मुर्गियों को व्यस्कों से अलग रखना चाहिए। स्वच्छ दाना पानी प्रदान करना चाहिए।

(ड.) हिस्टोमोनोसिस: यह एक घातक परजीवी रोग है जो विभिन्न प्रकार के कुक्कुटों में पाया जाता है। हर उम्र के टर्की संक्रमण के लिए ग्रहणषील होते हैं। किन्तु मुर्गी के बच्चे तुलनात्मक संक्रमण प्रतिरोधी होते हैं। ऐसे मुर्गी के बच्चे व अन्य जंगली पक्षी टर्की के लिए संक्रमण कुण्ड होते हैं। यह परजीवी हेटेराकिस गेलिनेरम नामक कृमि के अण्डों में पनपता है तथा इन अण्डों से संक्रमित होता है। यह बड़ी ऑत (सीकम) व यकृत को प्रभावित करता है।

लक्षण: प्रभावित मुर्गियॉ खाना कम खाती है। वे सिर झुकाकर षिथिल खड़ी रहती हैं तथा उनके पंख अव्यवस्थित हो जाते हैं। ग्रसित पक्षियों में गंधक जैसा पीला दस्त होने लगता है तथा उनकी कलगी नीली पड़ जाती है। जिसके कारण इसे ब्लैक हेड डिजीज के नाम से भी जाना जाता है। प्रभावित मुर्गियॉ लगातार कमजोर होती जाती हैं तथा लक्षण आने के एक हफ्ते के अन्दर मर जाती हैं।

निदान: प्रभावित मुर्गियों के लक्षण, मल परीक्षण या शव परीक्षण से इस बीमारी का निदान किया जा सकता है।

उपचार: प्रभावित मुर्गियों को फ्यूराजोलीडॉन (20%) 100 ग्रा0/100 कि0ग्रा0 दाने में 7 दिन तक अथवा फ्यूरॉलटाडॉन (20%) 1 ग्रा0/लि0 पानी में 5 दिन तक दिया जा सकता है।

रोकथाम: टर्की तथा मुर्गी को अलग–अलग पालना चाहिए। पक्षियों को कुछ समय के अन्तराल पर एसकेरिडिया रोग से मुक्त रखने के लिए कृमिनाषक से उपचारित करना चाहिए।

(1) बाह्य परजीवी:

बाह्य परजीवी मुर्गी के शरीर के ऊपर त्वचा आदि पर दिखाई देते हैं, जैसे– जुंए, किलनी, मक्खी, खटमल, पिस्सू आदि। बाह्य परजीवी मुर्गियों का खून चूसते हैं, उनकी चमड़ी की ऊपरी परतों को खाते हैं तथा रेंग कर मुर्गियों में संतापन उत्पन्न करते हैं। इनकी वजह से मुर्गियॉ परेषान रहती है, खुजलाती रहती हैं, रक्तहीन व कमजोर हो जाती है, शरीर में घाव हो जाते हैं तथा उन्हें

विभिन्न प्रकार की बिमारियॉ हो जाती हैं। कुप्रबन्धन, अतिसंग्रहण व किसी अन्य बिमारी के दवाब में पल रही मुर्गियों में जुओं आदि बाह्य परजीवियों का प्रकोप अधिक होता है। बाह्य परजीवी ग्रसित मुर्गियों के वजन व अण्डों की पैदावार में भारी कमी आती है। मुर्गियों की किलनियॉ कई घातक बिमारियॉ भी संक्रमित करते हैं जिनसे मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

निदानः मुर्गी की त्वचा पर अथवा पंखों के बीच इन बाह्य परजीवियों के व्यस्कों तथा जूओं के अण्डों को देखकर इनका निदान किया जा सकता है। रात के समय मुर्गीघर की जॉच करके, चटकाने वाली जगहों से निकलकर मुर्गियों की ओर पक्ति में बढ़ती हुई किलनियों को देखा जा सकता है। पशु चिकित्सक से मुर्गियों की खुरची त्वचा की जॉच करवाई जा सकती है।

उपचारः

दवा	मात्रा	बाह्य परजीवी उपचार हेतु
1. मेलाथियान	4–5% धूल या 0.5% छिड़काव	जू, घुन, पिस्सू, किलनी, खटमल के लिये
2. परमेथ्रिन	0.25% धूल या 0.5% छिड़काव	जू, घुन, पिस्सू
3. कारवेरिल	0.5% धूल या 0.2% छिड़काव	जू, घुन, पिस्सू
4. डाईक्लोरोवॉस	0.5% छिड़काव	जू, घुन, पिस्सू
5. टेट्राक्लोरविनफॉस	0.5–1% छिड़काव दीवारों तथा फर्ष पर (मुर्गियों पर नहीं)	घुन, पिस्सू, किलनी, खटमल, मक्खी व मच्छर के लिये
6. स्टीरोफॉस	1% छिड़काव	मक्खी, घुन
7. वेन्जाइल वेन्जोएट	10% घोल	घुन
8. लिन्डेन	0.2% घोल में डुबाकर	घुन
9. डेल्टामेथ्रिन	12.5–25 भाग प्रति 1000000 भाग में	जू, किलनी

रोकथामः बाह्य परजीवियों का मुर्गियों में आदान–प्रदान होने से रोकना चाहिए। नई मुर्गियों को प्रवेष कराने से पहले उनकी अच्छी तरह से जॉच कर लेनी चाहिए। मुर्गियों के गिरे हुए पंखों को जला देना चाहिए। उपचार के लिए दी गई दवाई का 10 से 14 दिन बाद फिर से छिड़काव करना चाहिए। मुर्गियों के बिछावन को बदलना चाहिए।

कुक्कुटों के प्रमुख परजीवी रोग

	अन्तः परजीवी	संक्रमण का स्थान	उपचार हेतु औषधी
1.	एस्केरीडिया	छोटी ऑत	पिपराजीन पानी या दाने में
2.	हेटेराकिस	बड़ी ऑत	पिपराजीन पानी या दाने में
3.	सिनगैमस ट्रेकिया	ष्वास नली	एलबेन्डाजोल खाने में 3–14 दिन तक
4.	प्रोसथोगोनिमस	अण्डाषय, बर्सा	मिवेनडाजोल खाने में 3–14 दिन तक
5.	फीता कृमि	छोटी ऑत	फेनवेनडाजोल, प्राजीक्वान्टेल निकलोसामाइड दाने में
6.	काक्सीडिया	छोटी व बड़ी ऑत	एम्प्रोलियम पानी/दाने में
7.	हिस्टोमोनास	बड़ी ऑत व यकृत	डाइमेट्रिडाजोल
	बाह्य परजीवी रोग	**संक्रमण का स्थान**	**उपचार हेतु औषधी**
1.	जूँ रोग	त्वचा/पंख/पैर	कारवेरिल का छिड़काव/नहान
2.	किलनी रोग		
3.	खाज		
4.	पिस्सू		

परजीवी रोगों से बचाव हेतु कुछ प्रमुख सुझावः

1. कम उम्र की मुर्गियों को व्यस्क मुर्गियों के साथ नहीं रखना चाहिए।
2. मुर्गियों के आवास में अथवा आस–पास केंचुऍं, घोंघे, कोंकरोच, चीटी आदि का प्रकोप नहीं होना चाहिए।
3. मुर्गियों के आवास की नियमित रूप से फिनायल आदि से सफाई होनी चाहिए ताकि गोल कृमि के अण्डों को नष्ट किया जा सके।
4. उनके दाने व साफ पानी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
5. समय–समय पर मुर्गी के विछावन को बदलते रहना चाहिए अथवा धूप में सुखाना चाहिए।
6. मुर्गियों की बीट/विष्ठा को फार्म से दूर फेंकना चाहिए।
7. मृत मुर्गियों का शव परीक्षण पशु चिकित्सक से अवष्य करवाना चाहिए।
8. मुर्गियों की बीट/विष्ठा का समय–समय पर पशु चिकित्सक द्वारा सूक्ष्मदर्षी यंत्र से जांच करानी चाहिए।